



बीएयू में आयोजित तीन दिवसीय मक्का संबंधी अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना की 69वीं वार्षिक कार्यशाला का गुरुवार को उद्घाटन करते अतिथि।

बीएयू में तीन दिवसीय कार्यशाला शुरू

मक्का उत्पादन क्षेत्र में सिरमौर बनेगा भारत

बोले डॉ. जाट

रांची, वरीय संवाददाता। भारत सरकार के कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के सचिव तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आइसीएआर) के महानिदेशक डॉ. एमएल जाट ने भारत को मक्का अनुसंधान, विकास और उत्पादन का वैश्विक केंद्र बनाने के लिए वैज्ञानिकों से एकजुट होने का आह्वान किया है। उन्होंने इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एक बेहतर डेटा इको-सिस्टम विकसित करने, विभिन्न शोध संस्थानों के बीच प्रभावी समन्वय और सार्वजनिक-निजी भागीदारी बढ़ाने पर विशेष जोर दिया।

डॉ. जाट गुरुवार को बिरसा कृषि विवि (बीएयू) में आयोजित मक्का संबंधी अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना की 69वीं वार्षिक कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। वैज्ञानिकों को सुझाव दिया कि डेटा का उपयोग सटीक पूर्वा

37 कृषि विवि व आईसीएआर संस्थानों के 250 से अधिक वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं

प्रोटीन वाली किस्मों पर शोध की जरूरत: डॉ. दुबे

बीएयू के कुलपति डॉ. एससी दुबे ने कहा कि झारखंड और बिहार में मक्का उत्पादन के क्षेत्र में वृद्धि की पर्याप्त संभावनाएं हैं। वर्तमान में झारखंड की उत्पादकता 2.4 टन प्रति हेक्टेयर है, जबकि राष्ट्रीय औसत 3.5 टन है। 15 प्रतिशत से अधिक प्रोटीन वाली किस्मों के विकास और कीट-रोगों से बचाव के लिए व्वायर्सटाइन सुविधाओं को मजबूत करने का सुझाव दिया।

अनाज उत्पादन में मक्का आज शीर्ष पर: डॉ. प्रधान

आइसीएआर के सहायक महानिदेशक डॉ. एसके प्रधान ने बताया, अनाज उत्पादन में मक्का दुनिया में शीर्ष पर है। भारत में मक्का उत्पादन 1299 मीट्रिक टन है, जबकि ग्लोबल 740

भारत को मक्का अनुसंधान का केंद्र बनायें वैज्ञानिक : डॉ एमएल



बिरसा कृषि विवि में आयोजित कार्यक्रम में पत्रिका का विमोचन करते अतिथि .

रांची. केंद्रीय कृषि अनुसंधान व शिक्षा विभाग के सचिव और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ मांगीलाल जाट ने कहा कि भारत को मक्का अनुसंधान, उत्पादन व नवाचार का वैश्विक केंद्र बनाने की दिशा में कार्य करें. सटीक डाटा, इको सिस्टम के विकास, विभिन्न शोध संस्थानों के प्रयासों के कनवर्जेस व प्राइवेट पब्लिक भागीदारी बढ़ाने की आवश्यकता है. गुरुवार को बिरसा कृषि विवि में मक्का संबंधी अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना की 69वीं वार्षिक कार्यशाला का उदघाटन कर रहे थे. आइसीएआर के उपमहानिदेशक

(फसल विज्ञान) डॉ डीके यादव ने कहा कि देश में मक्का की प्रति हेक्टेयर उत्पादकता वर्ष 2014-15 में 2567 किलो थी, जो बढ़कर 2024-25 में 3590 किलो हो गयी. हमने वर्ष 2030-31 तक इसे बढ़ाकर 4100 किलो का लक्ष्य रखा है. कुलपति डॉ एससी दुबे ने कहा कि झारखंड-बिहार में मक्का की उत्पादकता और क्षेत्र में वृद्धि की पर्याप्त संभावनाएं हैं. झारखंड में मक्का की प्रति हेक्टेयर उत्पादकता 2.4 टन है, जबकि राष्ट्रीय औसत लगभग 3.5 टन है. कार्यशाला में देश के 37 कृषि विवि व आइसीएआर संस्थानों के 250 से अधिक वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं.

भारत को मक्का अनुसंधान का वैश्विक केंद्र बनाने का आह्वान

मक्का वैज्ञानिकों की तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला शुरू

भास्करन्यूज़ | कांके

भारत सरकार के कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के सचिव व आईसीएआर के महानिदेशक डॉ. मांगी लाल जाट ने वैज्ञानिकों से भारत को मक्का अनुसंधान, विकास और नवाचार का वैश्विक केंद्र बनाने का आह्वान किया। वे गुरुवार को बिरसा कृषि विश्वविद्यालय (बीएयू) में आयोजित मक्का पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना की 69वीं वार्षिक कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने बेहतर डेटा इकोसिस्टम, विभिन्न संस्थानों के प्रयासों के समन्वय और पब्लिक-प्राइवेट भागीदारी बढ़ाने पर जोर दिया। कहा कि आंकड़ों का उपयोग सटीक पूर्वानुमान के लिए होना चाहिए। साथ

ही सीमित पोषक तत्वों के प्रभावी उपयोग वाली किस्मों के विकास पर बल दिया। आईसीएआर के उप महानिदेशक डॉ. डीके यादव ने बताया कि देश में मक्का की उत्पादकता 2014-15 के 2567 किलो प्रति हेक्टेयर से बढ़कर 2024-25 में 3590 किलो हो गई है, जिसे 2030-31 तक 4100 किलो करने का लक्ष्य है। कुलपति डॉ. एससी दुबे ने झारखंड-बिहार में उत्पादन बढ़ाने की संभावनाएं बताईं। झारखंड में मक्का की प्रति हेक्टेयर उत्पादकता 2.4 टन है, जबकि राष्ट्रीय औसत लगभग 3.5 टन है। बीज उत्पादन विस्तार कार्यों के लिए निजी क्षेत्र के साथ सहयोग वृद्धि पर जोर दिया। प्रगतिशील किसान नंदकिशोर साहू और अभिवेक मिश्र को सम्मानित किया गया।

► बिरसा कृषि विश्वविद्यालय में मक्का वैज्ञानिकों की तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला शुरू

भारत को मक्का अनुसंधान और विकास का वैश्विक केंद्र बनायें वैज्ञानिक : डॉ एमएल जाट

देश प्राण संवाददाता

रांची : भारत सरकार के कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के सचिव तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आइसीएआर) के महानिदेशक डॉ माँगी लाल जाट ने भारत को मक्का अनुसंधान, विकास, उत्पादन और नवाचार का वैश्विक केंद्र बनाने हेतु कमर कसने का आह्वान वैज्ञानिकों से किया है। इसके लिए उन्होंने अच्छे डेटा इको सिस्टम के विकास, विभिन्न शोध संस्थानों के प्रयासों के कन्वर्जेन्स और प्राइवेट-पब्लिक भागीदारी बढ़ाने पर जोर दिया है।

डॉ जाट वृहस्पतिवार को बिरसा कृषि विश्वविद्यालय (बीएयू) में आयोजित मक्का संबंधी अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना की 69वाँ वार्षिक कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। आंकड़ों को ज्यादा व्यवस्थित ढंग से संग्रहित करने पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि डेटा का इस्तेमाल सटीक पूर्वानुमान के लिए किया जाना चाहिए न कि प्रयासों और परिणामों के पोस्टमार्टम के लिए। उन्होंने कहा की



पोषक तत्वों की उपलब्धता असीमित नहीं है इसलिए इन्हें ज्यादा प्रभावी इस्तेमाल करनेवाले प्रभेदों के विकास पर शोध प्रयास केन्द्रित करना चाहिए। मानव पूँजी के विकास में ज्यादा विनियोग करने पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण, जानकारी और अनुभव के लिए वैज्ञानिकों को देश-दुनिया के सर्वोत्तम प्रयोगशालाओं में भेजा जाना चाहिए।

आइसीएआर के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ डीके यादव ने कहा कि देश में मक्का की प्रति हेक्टेयर उत्पादकता वर्ष 2014-15 में 2567 किलो थी जो में बढ़कर

2024-25 में 3590 किलो हो गयी। हमने वर्ष 2030-31 तक इसे बढ़ाकर 4100 किलो तक करने का लक्ष्य रखा है, किन्तु वैश्विक औसत उत्पादकता (6000 किलो प्रति हेक्टेयर) से यह अब भी बहुत कम है। ब्राजील में भी, जहाँ कृषि मौसम परिस्थितियाँ भारत जैसी ही हैं, उत्पादकता 5500 किलो है। देश में पिछले 11 सालों में 315 हाइब्रिड प्रभेदों (स्वीट कॉर्न, पॉप कॉर्न, बेबी कॉर्न, बायो फ्यूल पर्स, बायोफोर्टीफायड किस्में मिलाकर) का विकास किया गया है जिनमें 113 का श्रेय प्राइवेट सेक्टर को तथा 202 का श्रेय सरकारी क्षेत्र को जाता है।

बीएयू के कुलपति डॉ एससी दुबे ने कहा कि झारखण्ड-बिहार में मक्का की उत्पादकता और क्षेत्र में वृद्धि की पर्याप्त संभावनाएँ हैं। झारखण्ड में मक्का की प्रति हेक्टेयर उत्पादकता 2.4 टन है जबकि राष्ट्रीय औसत लगभग 3.5 टन है। उन्होंने 15 प्रतिशत से अधिक प्रोटीन वाले किस्मों के विकास, रोगों-कीड़ों से बचाव के लिए क्वारंटाइन सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण तथा बीज उत्पादन विस्तार कार्यों के लिए निजी क्षेत्र के साथ सहयोग वृद्धि पर जोर दिया।

आइसीएआर के सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसलें)

डॉ एसके प्रधान ने कहा कि दुनिया में अनाज उत्पादन में मक्का का सर्वोच्च स्थान है। नवीनतम आंकड़ों के अनुसार दुनिया में वर्ष में मक्का 1299 मिलियन टन, गेहूँ 740 मिलियन टन तथा चावल 540 मिलियन टन उगाया गया। उन्होंने वर्षाश्रित क्षेत्रों में उत्पादकता बढ़ाने और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के लिए क्लाइमेट-रेडी प्रभेद विकसित करने पर जोर दिया।

भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना के निदेशक डॉ एचएस जाट ने स्वागत भाषण करते हुए गत वर्ष का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया और कहा की देश में प्रयुक्त होनेवाले एथनाल का 40 प्रतिशत भाग मक्का से प्राप्त होता है।

कार्यशाला में देश के 37 कृषि विश्वविद्यालयों और आइसीएआर संस्थानों के 250 से अधिक वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं। इस अवसर पर नवोन्मेषी कृषि और उससे किसानों को जोड़कर उनकी उत्पादकता और आय बढ़ाने के लिये दो प्रगतिशील किसानों-चोरिया (चान्हो प्रखंड) के नंदकिशोर साहू और रांची के अभिषेक मिश्र को सम्मानित किया गया।

भारत को मक्का अनुसंधान का वैश्विक केंद्र बनाने का आह्वान

मक्का वैज्ञानिकों की तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला शुरू

भास्करन्यूज़ | कांके

भारत सरकार के कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के सचिव व आईसीएआर के महानिदेशक डॉ. मांगी लाल जाट ने वैज्ञानिकों से भारत को मक्का अनुसंधान, विकास और नवाचार का वैश्विक केंद्र बनाने का आह्वान किया। वे गुरुवार को बिरसा कृषि विश्वविद्यालय (बीएयू) में आयोजित मक्का पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना की 69वीं वार्षिक कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने बेहतर डेटा इकोसिस्टम, विभिन्न संस्थानों के प्रयासों के समन्वय और पब्लिक-प्रइवेट भागीदारी बढ़ाने पर जोर दिया। कहा कि आंकड़ों का उपयोग सटीक पूर्वानुमान के लिए होना चाहिए। साथ

ही सीमित पोषक तत्वों के प्रभावी उपयोग वाली किस्मों के विकास पर बल दिया। आईसीएआर के उप महानिदेशक डॉ. डीके यादव ने बताया कि देश में मक्का की उत्पादकता 2014-15 के 2567 किलो प्रति हेक्टेयर से बढ़कर 2024-25 में 3590 किलो हो गई है, जिसे 2030-31 तक 4100 किलो करने का लक्ष्य है। कुलपति डॉ. एससी दुबे ने झारखंड-बिहार में उत्पादन बढ़ाने की संभावनाएं बताईं। झारखंड में मक्का की प्रति हेक्टेयर उत्पादकता 2.4 टन है, जबकि राष्ट्रीय औसत लगभग 3.5 टन है। बीज उत्पादन विस्तार कार्यों के लिए निजी क्षेत्र के साथ सहयोग वृद्धि पर जोर दिया। प्रगतिशील किसान नंदकिशोर साहू और अभिषेक मिश्र को सम्मानित किया गया।

भारत को मक्का अनुसंधान और विकास का वैश्विक केंद्र बनाएं वैज्ञानिक : डॉ. एमएल जाट

राष्ट्रीय सागर संवाददाता

रांची : भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के महानिदेशक एवं कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग के सचिव डॉ. मांगी लाल जाट ने भारत को मक्का अनुसंधान, विकास और नवाचार का वैश्विक केंद्र बनाने के लिए वैज्ञानिकों से ठोस प्रयास करने का आह्वान किया है। उन्होंने इसके लिए बेहतर डेटा इको सिस्टम, विभिन्न शोध संस्थानों के बीच समन्वय और पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप को बढ़ावा देने पर जोर दिया। डॉ. जाट गुरुवार को बिरसा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित मक्का पर आधारित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना की 69वीं वार्षिक कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आंकड़ों को व्यवस्थित तरीके से संकलित कर उनका उपयोग सटीक पूर्वानुमान के लिए किया जाना चाहिए, न कि केवल



विक्षेपण के लिए। उन्होंने पोषक तत्वों के सीमित संसाधनों का जिक्र करते हुए कहा कि ऐसे मक्का प्रभेदों के विकास पर ध्यान देना चाहिए, जो कम संसाधनों में अधिक उत्पादन दे सकें। साथ ही वैज्ञानिकों के प्रशिक्षण और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा देने के लिए उन्हें देश-विदेश की श्रेष्ठ प्रयोगशालाओं में भेजने पर बल दिया। आईसीएआर के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. डीके यादव ने इस मौके पर बताया कि देश में मक्का की उत्पादकता 2014-15 में 2567 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर से बढ़कर 2024-25 में 3590 किलोग्राम प्रति

हेक्टेयर हो गई है। उन्होंने वर्ष 2030-31 तक इसे 4100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तक बढ़ाने का लक्ष्य रखा, हालांकि वैश्विक औसत 6000 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर से यह अभी भी कम है। कार्यक्रम में बीएयू के कुलपति डॉ. एससी दुबे ने कहा कि झारखंड और बिहार में मक्का उत्पादन बढ़ाने की अपार संभावनाएं हैं। उन्होंने बताया कि झारखंड में वर्तमान उत्पादकता 2.4 टन प्रति हेक्टेयर है, जो राष्ट्रीय औसत 3.5 टन से कम है। उन्होंने उच्च प्रोटीन वाली किस्मों के विकास, रोग-कीट नियंत्रण और बीज उत्पादन में निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ाने

पर जोर दिया। आईसीएआर के सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसलें) डॉ. एसके प्रधान ने कहा कि विश्व में अनाज उत्पादन में मक्का पहले स्थान पर है। नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, दुनिया में मक्का उत्पादन 1299 मिलियन टन, गेहूं 740 मिलियन टन और चावल 540 मिलियन टन है। भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. एचएस जाट ने स्वागत भाषण में बताया कि देश में उपयोग होने वाले एथनॉल का लगभग 40 प्रतिशत हिस्सा मक्का से प्राप्त होता है। कार्यशाला में देश के 37 कृषि विश्वविद्यालयों और आईसीएआर संस्थानों के 250 से अधिक वैज्ञानिकों ने भाग लिया। इस अवसर पर नवाचार आधारित कृषि को बढ़ावा देने के लिए चोरेया (चान्हो) के किसान नंदकिशोर साहू और रांची के अभिषेक मिश्र को सम्मानित किया गया।

बीएयू में मक्का वैज्ञानिकों की तीनदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला शुरू

भारत को मक्का अनुसंधान और विकास का वैश्विक केंद्र बनाएं वैज्ञानिक : डॉ एमएल जाट

नवीन मेल संवाददाता

रांची। भारत सरकार के कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के सचिव तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आइसीएआर) के महानिदेशक डॉ माँगी लाल जाट ने भारत को मक्का अनुसंधान, विकास, उत्पादन और नवाचार का वैश्विक केंद्र बनाने हेतु कसर कसने का आह्वान वैज्ञानिकों से किया है। इसके लिए उन्होंने अच्छे डेटा इको सिस्टम के विकास, विभिन्न शोध संस्थानों के प्रयासों के कन्वर्जेन्स और प्राइवेट-पब्लिक भागीदारी बढ़ाने पर जोर दिया है।

डॉ जाट वृहस्पतिवार को बिरसा कृषि विश्वविद्यालय (बीएयू) में आयोजित मक्का संबंधी अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना की 69वीं वार्षिक कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। आंकड़ों को ज्यादा व्यवस्थित ढंग से संग्रहीत करने पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि डेटा का इस्तेमाल



सटीक पूर्वानुमान के लिए किया जाना चाहिए न कि प्रयासों और परिणामों के पोस्टमार्टम के लिए। उन्होंने कहा की पोषक तत्वों की उपलब्धता असीमित नहीं है इसलिए इन्हें ज्यादा प्रभावी इस्तेमाल करनेवाले प्रभेदों के विकास पर शोध प्रयास केन्द्रित करना चाहिए। मानव पूंजी के विकास में ज्यादा विनियोग करने पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण, जानकारी और अनुभव के लिए वैज्ञानिकों को देश-दुनिया के सर्वोत्तम प्रयोगशालाओं में भेजा जाना चाहिए। आइसीएआर के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ डीके यादव ने कहा कि देश में मक्का

की प्रति हेक्टेयर उत्पादकता वर्ष 2014-15 में 2567 किलो थी जो में बढ़कर 2024-25 में 3590 किलो हो गयी। हमने वर्ष 2030-31 तक इसे बढ़ाकर 4100 किलो तक करने का लक्ष्य रखा है। किन्तु वैश्विक औसत उत्पादकता (6000 किलो प्रति हेक्टेयर) से यह अब भी बहुत कम है। ब्राजील में भी, जहाँ कृषि मौसम परिस्थितियाँ भारत जैसी ही हैं, उत्पादकता 5500 किलो है। देश में पिछले 11 सालों में 315 हाइब्रिड प्रभेदों का विकास किया गया है जिनमें 113 का श्रेय प्राइवेट सेक्टर को तथा 202 का श्रेय सरकारी क्षेत्र को जाता है।

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय में मक्का वैज्ञानिकों की तीनदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला शुरू

भारत को मक्का अनुसंधान और विकास का वैश्विक केंद्र बनायें वैज्ञानिक : डॉ एमएल जाट

नव प्रदेश संवाददाता

रांची। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के महानिदेशक डॉ मीणा लाल जाट ने वैज्ञानिकों से भारत को मक्का अनुसंधान, विकास, उत्पादन और नवाचार का वैश्विक केंद्र बनाने का आह्वान किया। उन्होंने केहर डेटा इन्फोसिस्टम विकसित करने, विभिन्न शोध संस्थानों के प्रवासों के समन्वय (कन्वर्जेंस) और पब्लिक-प्रिवेट भागीदारी को बढ़ाने पर जोर दिया।



डॉ जाट ने कहा कि आंकड़ों को व्यवस्थित ढंग से संग्रहित कर उनका उपयोग सटीक पूर्वानुमान के लिए किया जाना चाहिए, न कि केवल परिणामों के विश्लेषण तक सीमित रखा जाए। उन्होंने पोषक तत्वों के सीमित संसाधनों को

ध्यान में रखते हुए अधिक कुशल प्रभेद विकसित करने पर शोध केंद्रित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने वैज्ञानिकों के कौशल विकास पर भी बल देते हुए कहा कि उन्हें देश-विदेश की श्रेष्ठ



प्रयोगशालाओं में प्रशिक्षण, अनुभव और जानकारी के लिए भेजा जाना चाहिए, जिससे मानव संसाधन और मजबूत हो सके। आईसीएआर के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ डीकि यादव ने बताया कि देश में मक्का की

प्रति हेक्टेयर उत्पादकता 2014-15 में 2567 किलोग्राम से बढ़कर 2024-25 में 3590 किलोग्राम हो गई है। वर्ष 2030-31 तक इसे 4100 किलोग्राम तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है, हालांकि यह अभी भी वैश्विक औसत (6000

किलोग्राम प्रति हेक्टेयर) से कम है। वीएच के कुलपति डॉ एससी दुबे ने झारखंड-बिहार में मक्का उत्पादन की व्यापक संभावनाओं पर प्रकाश डालते हुए बताया कि झारखंड में उत्पादकता 2.4 टन

प्रति हेक्टेयर है, जो राष्ट्रीय औसत 3.5 टन से कम है। उन्होंने उच्च प्रोटीन (15% से अधिक) वाली किस्मों के विकास, रोप-कॉट निर्माण के लिए क्वॉरंटायन सुविधाओं के सुदृढीकरण और बीज उत्पादन में निजी क्षेत्र के सहयोग को बढ़ाने की आवश्यकता जताई। आईसीएआर के सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसलें) डॉ एसके प्रधान ने बताया कि वैश्विक स्तर पर अनाज उत्पादन में मक्का का पहला स्थान है। नवीनतम आंकड़ों के अनुसार दुनिया में 1299 मिलियन टन मक्का, 740 मिलियन टन गेहूं और 540 मिलियन टन चावल का उत्पादन होता है। उन्होंने वर्षा आधारित क्षेत्रों में उत्पादकता

बढ़ाने और जलवायु-अनुकूल (क्लाइमेट-रेडी) प्रभेद विकसित करने पर जोर दिया। इस अवसर पर भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ एचएस जाट ने स्वागत भाषण देते हुए बताया कि देश में उपयोग होने वाले एथनीस का लगभग 40 प्रतिशत हिस्सा मक्का से प्राप्त होता है। कार्यशाला में देश के 37 कृषि विश्वविद्यालयों और आईसीएआर संस्थानों के 250 से अधिक वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं। साथ ही, नवाचार के माध्यम से कृषि उत्पादन और किसानों की आय बढ़ाने में योगदान देने वाले प्रगतिशील किसानों-नवकिसानों (चालो) और अभिषेक मिश्र (संचो) को सम्मानित किया गया।



भारत को मक्का अनुसंधान और विकास का वैश्विक केंद्र बनायें वैज्ञानिक: डॉ. एमएल जाट

एक संदेश संवाददाता

रांची: भारत सरकार के कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के सचिव तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आइसीएआर) के महानिदेशक डॉ. माँगी लाल जाट ने भारत को मक्का अनुसंधान, विकास, उत्पादन और नवाचार का वैश्विक केंद्र बनाने हेतु कमर कसने का आह्वान वैज्ञानिकों से किया है। इसके लिए उन्होंने अच्छे डेटा इको सिस्टम के विकास, विभिन्न शोध संस्थानों के प्रयासों के कन्वर्जेन्स और प्राइवेट-पब्लिक भागीदारी बढ़ाने पर जोर दिया। डॉ. जाट वृहस्पतिवार को बिरसा कृषि विश्वविद्यालय (बीएयू) में आयोजित मक्का संबंधी अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना की 69वीं वार्षिक कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। क आंकड़ों को ज्यादा व्यवस्थित ढंग से संग्रहीत करने पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि डेटा का इस्तेमाल सटीक पूर्वानुमान के लिए किया जाना चाहिए न कि प्रयासों और परिणामों के पोस्टमार्टम के लिए क उन्होंने कहा की पोषक तत्वों की उपलब्धता असीमित नहीं है इसलिए इन्हें ज्यादा



प्रभावी इस्तेमाल करनेवाले प्रभेदों के विकास पर शोध प्रयास केन्द्रित करना चाहिए क मानव पूंजी के विकास में ज्यादा विनियोग करने पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण, जानकारी और अनुभव के लिए वैज्ञानिकों को देश-दुनिया के सर्वोत्तम प्रयोगशालाओं में भेजा जाना चाहिए। बीएयू के कुलपति डॉ. एससी दुबे ने कहा कि झारखण्ड-बिहार में मक्का की उत्पादकता और क्षेत्र में वृद्धि की पर्याप्त संभावनाएं हैं। झारखण्ड में मक्का की प्रति हेक्टेयर उत्पादकता 2.4 टन है जबकि राष्ट्रीय औसत लगभग 3.5 टन है। उन्होंने 15 प्रतिशत से अधिक प्रोटीन वाले किस्मों के विकास, रोगों-कीड़ों से

बचाव के लिए क्वारेंटाइन सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण तथा बीज उत्पादन विस्तार कार्यों के लिए निजी क्षेत्र के साथ सहयोग वृद्धि पर जोर दिया। आइसीएआर के सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसलें) डॉ. एसके प्रधान ने कहा कि दुनिया में अनाज उत्पादन में मक्का का सर्वोच्च स्थान है क नवीनतम आंकड़ों के अनुसार दुनिया में वर्ष में मक्का 1299 मिलियन टन, गेहूं 740 मिलियन टन तथा चावल 540 मिलियन टन उगाया गया क उन्होंने वर्षाश्रित क्षेत्रों में उत्पादकता बढ़ाने और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के लिए क्लाइमेट-रेडी प्रभेद विकसित करने पर जोर दिया।



ICAR Chief Calls for Data-Driven Innovation at National Maize Workshop in Ranchi



PC JHA

RANCHI: A three-day national workshop on maize research commenced at Birsa Agricultural University (BAU), bringing together leading scientists and experts from across the country to deliberate on advancing India's maize sector.

Addressing the 69th Annual Workshop of the All India Coordinated Research Project on Maize, Dr Mangilal Jat, Secretary, Department of Agricultural Research and Education, and Director General of Indian Council of Agricultural Research (ICAR), urged scientists to work collectively towards transforming India into a global hub for maize research, development, and innovation.

He emphasized the creation of a robust data ecosystem, greater convergence among research institutions,

and stronger public-private partnerships. "Data must be systematically generated and utilized for accurate forecasting, not merely for post-analysis," he said, while also stressing the need to develop nutrient-efficient crop varieties and invest in human capital through advanced training.

Highlighting progress, Dr DK Yadav noted that India's maize productivity has risen from 2,567 kg per hectare in 2014-15 to 3,590 kg per hectare in 2024-25, with a target of 4,100 kg by 2030-31. However, this remains below the global average of 6,000 kg per hectare.

BAU Vice Chancellor Dr SC Dubey pointed to significant growth potential in Jharkhand and Bihar, emphasizing high-protein varieties, improved pest protection, and stronger private sector collaboration.

भारत को मक्का अनुसंधान और विकास का वैश्विक केंद्र बनाएं विज्ञानी : डा. एमएल जाट

जागरण संवाददाता, रांची: केंद्र सरकार के कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के सचिव तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आइसीएआर) के महानिदेशक डा. मांगी लाल जाट ने भारत को मक्का अनुसंधान, विकास, उत्पादन और नवाचार का वैश्विक केंद्र बनाने के लिए विज्ञानियों से सक्रियता से काम करने का आग्रह किया है। उन्होंने अच्छे डेटा इको सिस्टम के विकास, विभिन्न शोध संस्थानों के प्रयासों के कन्वर्जेन्स और प्राइवेट-पब्लिक भागीदारी बढ़ाने पर जोर दिया। डा. जाट ने बिरसा एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी रांची (बीएयू) में आयोजित मक्का संबंधी अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना की 69वीं वार्षिक कार्यशाला में यह बात कही। उन्होंने कहा कि डेटा का उपयोग सटीक पूर्वानुमान के लिए होना चाहिए, न कि प्रयासों और



बीएयू में आयोजित कार्यशाला में शामिल कुलपति व अन्य अतिथि • सौ. स्वयं

परिणामों के पोस्टमार्टम के लिए। पोषक तत्वों की सीमित उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए, उन्होंने प्रभावी उपयोग के लिए प्रभेदों के विकास पर शोध करने की आवश्यकता पर बल दिया। आइसीएआर के उप महानिदेशक डा. डीके यादव ने बताया कि मक्का की प्रति हेक्टेयर उत्पादकता 2014-15 में 2567 किलो थी, जो 2024-25 में 3590 किलो होने का अनुमान है। बीएयू के कुलपति डा. एससी दुबे ने झारखंड-बिहार में

मक्का की उत्पादकता बढ़ाने की संभावनाओं पर चर्चा की। कार्यशाला में 37 कृषि विश्वविद्यालयों और आइसीएआर संस्थानों के 250 से अधिक विज्ञानी शामिल हुए। इस अवसर पर नवोन्मेषी कृषि और उससे किसानों को जोड़कर उनकी उत्पादकता और आय बढ़ाने के लिए दो प्रगतिशील किसानों चोरेया (चान्हो प्रखंड) के नंदकिशोर साहू और रांची के अभिषेक मिश्र को सम्मानित किया गया।

Call to make India global hub for maize research

PIONEER NEWS SERVICE

■ Ranchi

Mangilal Jat, Secretary of the Department of Agricultural Research and Education, Government of India, and Director General of the Indian Council of Agricultural Research (ICAR), called upon scientists to work collectively towards making India a global center for maize research, development, production, and innovation.

Addressing the 69th Annual Workshop of the All India Coordinated Research Project on Maize at Birsa Agricultural University (BAU) on Thursday, Dr Jat emphasized the need to develop a strong data ecosystem, ensure convergence among various research institutions, and promote public-private partnerships.

He stressed that data should be systematically collected and used for accurate forecasting rather than merely for post-analysis of efforts and outcomes.

He also highlighted that nutrients are not unlimited, so research should focus on developing crop varieties having greater nutrient use efficiency. Emphasising investment in human capital, he suggested that scientists should be trained and exposed to the best laboratories across the country and the world.

ICAR Deputy Director General (Crop Science), Dr DK Yadav, stated that India's maize productivity has

increased from 2,567 kg per hectare in 2014–15 to 3,590 kg per hectare in 2024–25. The target is to raise it to 4,100 kg per hectare by 2030–31. However, this is still significantly lower than the global average of 6,000 kg per hectare. He noted that Brazil, with similar agro-climatic conditions, achieves about 5,500 kg per hectare. Over the past 11 years, 315 hybrid maize varieties (including sweet corn, popcorn, baby corn, biofuel-purpose, and biofortified varieties) have been developed in India—113 by the private sector and 202 by the public sector.

BAU Vice Chancellor Dr SC Dubey said there is strong potential to increase maize productivity and area in Jharkhand and Bihar. Currently, maize productivity in Jharkhand is 2.4 tons per hectare compared to the national average of about 3.5 tons. He emphasized developing varieties with more than 15% protein content, strengthening quarantine facilities to protect crops from pests and diseases, and enhancing collaboration with the private sector in seed production and extension.

ICAR Assistant Director General (Food and Fodder Crops), Dr SK Pradhan, stated that maize ranks first among global cereal production. According to recent data, annual global production stands at 1,299 million tons for maize, compared to 740 million tons for wheat and 540 million tons for rice.

बीएयू में मक्का वैज्ञानिकों की तीनदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का समापन

जलवायु सहिष्णु उच्च गुणवत्ता वाले हाइब्रिड प्रभेदों के विकास पर शोध बढ़ाने की जरूरत : डॉ एससी दुबे

प्रातः नागपुरी संवाददाता

रांची। देश में मक्का उत्पादन, उत्पादकता बढ़ाने और बदलते जलवायु परिदृश्य में इसके क्षेत्र विस्तार की रणनीतियों पर चर्चा करने और उच्च उपज क्षमता वाली नवी किस्मों की पहचान करने के उद्देश्य से बिरसा कृषि विश्वविद्यालय में 9 से 11 अप्रैल तक आयोजित मक्का वैज्ञानिकों की तीनदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला शनिवार को समाप्त हो गयी। कार्यशाला के दौरान मक्का सम्बन्धी अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (एआइसीएआरपी) के तहत वर्ष 2025 के दौरान राज्यवार/ क्षेत्रवार उपलब्धियों की समीक्षा की गयी। अगले वर्ष के लिए अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रम का रोडमैप तैयार किया गया।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि बीएयू के कुलपति डॉ एससी दुबे ने कहा एआइसीएआरपी के तहत प्राइवेट सेक्टर के साथ मिलकर हाइब्रिड प्रभेदों के विकास पर शोध प्रयास बढ़ाने की आवश्यकता है कउन्होंने 15 प्रतिशत से अधिक प्रोटीन कंटेंट, बड़ा दाना आकार तथा अधिक



स्टार्च वाले, जलवायु सहिष्णु और रोगरोधी प्रभेदों के विकास तथा रोगों-कीड़ों से बचाव हेतु क्वारंटाइन सुविधाओं के सुदृढीकरण पर जोर दिया। कुलपति ने कहा कि देश में उत्पादित मक्का का लगभग 50 पशुओं के दाना-चारा में प्रयोग होता है और पेट्रोल में 30 प्रतिशत तक एथनाल मिलाने की अनुमति है। इसलिए मक्का उत्पादन बढ़ाकर क्रूड आयात पर होनेवाले खर्च को अरबों डॉलर घटया जा सकता है कउन्होंने कहा कि देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रति हेक्टेयर मक्का उत्पादन 2 से 5 क्विंटल है कउपज के इस गैप को कम करने के लिए प्रभावी प्रौद्योगिकी

प्रसार कार्यक्रम की जरूरत है।

भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना के निदेशक डॉ एचएस जाट ने कहा कि देश में चल रहे सतत शोध प्रयासों के फलस्वरूप स्वीट कॉर्न, पॉप कॉर्न, बेबी कॉर्न, बायो फ्यूल पर्स, बायोफोर्टीफाईड किस्में मिलाकर मक्का के कुल 39 उन्नत प्रभेद देश के विभिन्न क्षेत्रों के लिए जारी करने हेतु चिन्हित किये गए, इनमें से 30 खरीफ मौसम के लिए हैं करोगों, कीड़ों और नमी की कमी के प्रति सहिष्णु इन उच्च उपजशील प्रभेदों के विकास में 25 केन्द्रों का योगदान रहा। उन्होंने वैज्ञानिकों के प्रयासों की सराहना करते हुए

उनसे और कड़ी मेहनत करने का आग्रह किया। इस अवसर पर आइसीएआर के सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसलें) डॉ एसके प्रधान, मक्का परियोजना सलाहकार एवं प्रबंधन समिति के अध्यक्ष डॉ सैन दास, मक्का सम्बन्धी अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के नोडल ऑफिसर डॉ सुनील मीलम तथा कार्यशाला की आयोजन सचिव डॉ मणिगोपा चक्रवर्ती ने भी अपने विचार रखे। मक्का अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में लम्बे समय तक विशिष्ट योगदान के लिए बीएयू के अनुवैशिकी एवं पौधा प्रजनन विभाग की अध्यक्ष डॉ मणिगोपा चक्रवर्ती तथा केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, कसाल, हरियाणा के प्रधान वैज्ञानिक डॉ आदित्य कुमार सिंह को सम्मानित किया गया कइस अवसर पर डॉ संतोष कुमार, डॉ भूपेंद्र कुमार एवं डॉ मणिगोपा चक्रवर्ती द्वारा संयुक्त रूप से मक्का फसल पर लिखी गयी पुस्तक का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम में स्टार्च, फीड, एथेनॉल, बीज, कृषि रसायन, कृषि यंत्र से जुड़े उद्योगों के प्रतिनिधियों, राष्ट्रीय एवं राज्य बीज निगमों के अधिकारियों और प्रतिशिल किसानों सहित देश के 37 कृषि विश्वविद्यालयों एवं आइसीएआर अनुसंधान संस्थानों के 250 से अधिक वैज्ञानिक शामिल हुए।

जलवायु सहिष्णु उच्च गुणवत्ता वाले हाइब्रिड प्रभेदों के विकास पर शोध बढ़ाने की आवश्यकता: डॉ एससी दुबे

बीएयू में मक्का वैज्ञानिकों की तीनदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का हुआ समापन

खबर मन्त्र द्यूते

रांची। देश में मक्का उत्पादन, उत्पादकता बढ़ाने और बदलते जलवायु परिदृश्य में इसके क्षेत्र विस्तार की रणनीतियों पर चर्चा करने तथा उच्च उपज क्षमता वाली नवी किस्मों की पहचान करने के उद्देश्य से बिरसा कृषि विश्वविद्यालय में 9 से 11 अप्रैल तक आयोजित मक्का वैज्ञानिकों की तीनदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला शनिवार को समाप्त हो गयी। कार्यशाला के दौरान मक्का सम्बन्धी अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (एआइसीएआरपी) के तहत वर्ष 2025 के दौरान राज्यवार/क्षेत्रवार उपलब्धियों की समीक्षा की गयी तथा अगले वर्ष के लिए अनुसंधान एवं

विकास कार्यक्रम का रोडमैप तैयार किया गया। समापन सत्र के मुख्य अतिथि बीएयू के कुलपति डॉ एससी दुबे ने कहा एआइसीएआरपी के तहत प्राइवेट सेक्टर के साथ मिलकर हाइब्रिड प्रभेदों के विकास पर शोध प्रयास बढ़ाने की आवश्यकता है। उन्होंने 15 प्रतिशत से अधिक प्रोटीन कंटेंट, बड़ा दाना आकार तथा अधिक स्टार्च वाले, जलवायु सहिष्णु और रोगरोधी प्रभेदों के विकास तथा रोगों-कीड़ों से बचाव हेतु क्वॉरेंटाइन सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण पर जोर दिया।

कुलपति ने कहा कि देश में उत्पादित मक्का का लगभग 50 पशुओं के दाना-चारा में प्रयोग होता है और पेट्रोल में 30 प्रतिशत तक एथनाल मिलाने की अनुमति

है। इसलिए मक्का उत्पादन बढ़ाकर कूड आयात पर होनेवाले खर्च को अरबों डॉलर घटाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रति हेक्टेयर मक्का उत्पादन 2 से 5 किबंटल है कउपज के इस गैप को कम करने के लिए प्रभावी प्रौद्योगिकी प्रसार कार्यक्रम की जरूरत है। भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना के निदेशक डॉ एचएस जाट ने कहा कि देश में चल रहे सतत शोध प्रयासों के फलस्वरूप स्वीट कॉर्न, पॉप कॉर्न, बेबी कॉर्न, बायो फ्यूल पॉपस, बायोफोटीफाईड किस्में मिलाकर मक्का के कुल 39 उन्नत प्रभेद देश के विभिन्न क्षेत्रों के लिए जारी करने हेतु चिन्हित किये गए, इनमें से 30 खरीफ मौसम के लिए हैं क रोगों, कीड़ों

और नमी की कमी के प्रति सहिष्णु इन उच्च उपजशील प्रभेदों के विकास में 25 केन्द्रों का योगदान रहा क उन्होंने वैज्ञानिकों के प्रयासों की सराहना करते हुए उनसे और कड़ी मेहनत करने का आग्रह किया।

मौके पर आइसीएआर के सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसलें) डॉ एसके प्रधान, मक्का परियोजना सलाहकार एवं प्रबंधन समिति के अध्यक्ष डॉ सैन दास, मक्का सम्बन्धी अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के नोडल ऑफिसर डॉ सुनील नीलम तथा कार्यशाला की आयोजन सचिव डॉ मणिगोपा चक्रवर्ती ने भी अपने विचार रखे। मक्का अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में लम्बे समय तक विशिष्ट योगदान के लिए बीएयू के

आनुवंशिकी एवं पौधा प्रजनन विभाग की अध्यक्ष डॉ मणिगोपा चक्रवर्ती तथा केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल, हरियाणा के प्रधान वैज्ञानिक डॉ आदित्य कुमार सिंह को सम्मानित किया गया कइस अवसर पर डॉ संतोष कुमार, डॉ भूपेंद्र कुमार एवं डॉ मणिगोपा चक्रवर्ती द्वारा संयुक्त रूप से मक्का फसल पर लिखी गयी पुस्तक का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम में स्टार्च, फीड, एथेनॉल, बीज, कृषि रसायन, कृषि यंत्र से जुड़े उद्योगों के प्रतिनिधियों, राष्ट्रीय एवं राज्य बीज निगमों के अधिकारियों और प्रगतिशील किसानों सहित देश के 37 कृषि विश्वविद्यालयों एवं आइसीएआर अनुसंधान संस्थानों के 250 से अधिक वैज्ञानिक शामिल थे।



बीएयू में मक्का वैज्ञानिकों की तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का समापन

हाइब्रिड प्रभेदों के विकास पर शोध बढ़ाने की आवश्यकता : कुलपति

नवीन मेल संवाददाता

रांची। देश में मक्का उत्पादन, उत्पादकता बढ़ाने और बदलते जलवायु परिदृश्य में इसके क्षेत्र विस्तार की रणनीतियों पर चर्चा करने तथा उच्च उपज क्षमता वाली नयी किस्मों की पहचान करने के उद्देश्य से बिरसा कृषि विश्वविद्यालय में 9 से 11 अप्रैल तक आयोजित मक्का वैज्ञानिकों की तीनदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला शनिवार को समाप्त हो गयी। कार्यशाला के दौरान मक्का सम्बन्धी अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (एआइसीएआरपी) के तहत वर्ष 2025 के दौरान राज्यवार/ क्षेत्रवार



उपलब्धियों की समीक्षा की गयी तथा अगले वर्ष के लिए अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रम का रोडमैप तैयार किया गया। समापन सत्र के मुख्य अतिथि बीएयू के कुलपति डॉ. एससी दुबे ने कहा एआइसीएआरपी के तहत प्राइवेट सेक्टर के साथ मिलकर हाइब्रिड प्रभेदों के विकास पर शोध प्रयास बढ़ाने की आवश्यकता है। उन्होंने 15 प्रतिशत से अधिक

प्रोटीन कंटेंट, बड़ा दाना आकार तथा अधिक स्टार्च वाले, जलवायु सहिष्णु और रोगरोधी प्रभेदों के विकास तथा रोगों-कीड़ों से बचाव हेतु क्वॉरेंटाइन सुविधाओं के सुदृढीकरण पर जोर दिया। कुलपति ने कहा कि देश में उत्पादित मक्का का लगभग 50 पशुओं के दाना-चारा में प्रयोग होता है और पेट्रोल में 30 प्रतिशत तक एथनाल मिलाने की अनुमति है।

इसलिए मक्का उत्पादन बढ़ाकर क़ूड आयात पर होनेवाले खर्च को अरबों डॉलर घटाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रति हेक्टेयर मक्का उत्पादन 2 से 5 क्विंटल है। उपज के इस गैप को कम करने के लिए प्रभावी प्रौद्योगिकी प्रसार कार्यक्रम को जरूरत है। भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना के निदेशक डॉ. एचएस जाट ने कहा कि देश में चल रहे सतत शोध प्रयासों के फलस्वरूप स्वीट कॉर्न, पॉप कॉर्न, बेबी कॉर्न, बायो पन्थूल पर्पस, बायोफोर्टीफ़ायड किस्में मिलाकर मक्का के कुल 39 उन्नत प्रभेद देश के विभिन्न क्षेत्रों के लिए जारी करने हेतु चिन्हित किये गए।

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय में मक्का वैज्ञानिकों की तीनदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का समापन

रांची एक्सप्रेस संवाददाता

रांची : देश में मक्का उत्पादन, उत्पादकता बढ़ाने और बदलते जलवायु परिदृश्य में इसके क्षेत्र विस्तार की रणनीतियों पर चर्चा करने तथा उच्च उपज क्षमता वाली नयी किस्मों की पहचान करने के उद्देश्य से बिरसा कृषि विश्वविद्यालय में 9 से 11 अप्रैल तक आयोजित मक्का वैज्ञानिकों की तीनदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला शनिवार को समाप्त हो गयी।

कार्यशाला के दौरान मक्का सम्बन्धी अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (एआइसीएआरपी) के तहत वर्ष 2025 के दौरान राज्यवार/क्षेत्रवार उपलब्धियों की समीक्षा की गयी तथा अगले वर्ष के लिए अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रम का रोडमैप तैयार किया गया।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि बीएयू के कुलपति डॉ एससी दुबे ने कहा एआइसीएआरपी के तहत प्राइवेट सेक्टर के साथ मिलकर



हाइब्रिड प्रभेदों के विकास पर शोध प्रयास बढ़ाने की आवश्यकता है। उन्होंने 15 प्रतिशत से अधिक प्रोटीन कंटेंट, बड़ा दाना आकार तथा अधिक स्टार्च वाले, जलवायु सहिष्णु और रोगरोधी प्रभेदों के विकास तथा रोगों-कीड़ों से बचाव हेतु क्वारेन्टाइन सुविधाओं के सुदृढीकरण पर जोर दिया।

कुलपति ने कहा कि देश में उत्पादित मक्का का लगभग 50 पशुओं के दाना-चारा में प्रयोग होता है और पेट्रोल में 30 प्रतिशत तक एथनाल मिलाने की अनुमति

है। इसलिए मक्का उत्पादन बढ़ाकर क़ूड आयात पर होनेवाले खर्च को अरबों डॉलर घटाया जा सकता है क उन्होंने कहा कि देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रति हेक्टेयर मक्का उत्पादन 2 से 5 क्विंटल है क उपज के इस गैप को कम करने के लिए प्रभावी प्रौद्योगिकी प्रसार कार्यक्रम की जरूरत है।

भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना के निदेशक डॉ एचएस जाट ने कहा कि देश में चल रहे सतत शोध प्रयासों के फलस्वरूप स्वीट कॉर्न, पॉप कॉर्न, बेबी कॉर्न, बायो फ्यूल

पर्पस, बायोफोटीर्फायड किस्में मिलाकर मक्का के कुल 39 उन्नत प्रभेद देश के विभिन्न क्षेत्रों के लिए जारी करने हेतु चिन्हित किये गए, इनमे से 30 खरीफ मौसम के लिए हैं क रोगों, कीड़ों और नमी की कमी के प्रति सहिष्णु इन उच्च उपजशील प्रभेदों के विकास में 25 केन्द्रों का योगदान रहा क उन्होंने वैज्ञानिकों के प्रयासों की सराहना करते हुए उनसे और कड़ी मेहनत करने का आग्रह किया।

इस अवसर पर डॉ संतोष कुमार, डॉ भूपेंद्र कुमार एवं डॉ मणिगोपा चक्रवर्ती द्वारा संयुक्त रूप से मक्का फसल पर लिखी गयी पुस्तक का लोकार्पण किया गया क

कार्यक्रम में स्टार्च, फीड, एथेनॉल, बीज, कृषि रसायन, कृषि यंत्र से जुड़े उद्योगों के प्रतिनिधियों, राष्ट्रीय एवं राज्य बीज निगमों के अधिकारियों और प्रातिशील किसानों सहित देश के 37 कृषि विश्वविद्यालयों एवं आइसीएआर अनुसंधान संस्थानों के 250 से अधिक वैज्ञानिक शामिल हुए।

11 अप्रैल, 2026

दैनिक, सुका पत्र, लखी
संख्या 2083

पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹3.00

रांची

शनिवार, वर्ष 11, अंक 171

www.epaper.azadsipahi.in

कलम कलम बढ़ाये जा

बंगाल में अमित शाह
ने जारी किया भाजपा
का "संकल्प पत्र"

आजाद सिपाही



बिरसा कृषि विश्वविद्यालय में मक्का वैज्ञानिकों की तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला संपन्न

आजाद सिपाही संवाददाता

कांके। बिरसा कृषि विश्वविद्यालय (बीएयू) में 9 से 11 अप्रैल तक आयोजित मक्का वैज्ञानिकों की तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला शनिवार को सफलतापूर्वक संपन्न हो गयी। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य देश में मक्का उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाने, बदलते जलवायु परिदृश्य में फसल के क्षेत्र विस्तार की रणनीति तैयार करने तथा उच्च उपज क्षमता वाली नयी किस्मों की पहचान करना था। कार्यशाला के दौरान मक्का संबंधी अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (एआईसीएआरपी) के अंतर्गत वर्ष 2025 में राज्यों और क्षेत्रों की उपलब्धियों की समीक्षा की गई तथा आगामी वर्ष के लिए अनुसंधान और विकास का रोडमैप तैयार किया गया। समापन सत्र में बीएयू के कुलपति डॉ. एस.सी. दुबे ने कहा कि एआईसीएआरपी के तहत निजी क्षेत्र के सहयोग से हाइब्रिड प्रभेदों के विकास पर शोध को और तेज करने की आवश्यकता है। उन्होंने 15 प्रतिशत से अधिक प्रोटीन, बड़े दाने, अधिक स्टार्च, जलवायु सहिष्णुता और रोगरोधी



गुणों वाले मक्का प्रभेदों के विकास पर जोर दिया। साथ ही रोग और कीट नियंत्रण के लिए क्वारंटाइन सुविधाओं को मजबूत करने की आवश्यकता भी बतायी। उन्होंने कहा कि देश में उत्पादित मक्का का लगभग 50 प्रतिशत पशु आहार के रूप में उपयोग होता है, जबकि पेट्रोल में 30 प्रतिशत तक एथेनॉल मिश्रण की अनुमति है। ऐसे में मक्का उत्पादन बढ़ाकर कच्चे तेल के आयात पर होने वाला खर्च अरबों डॉलर तक कम किया जा सकता है। उन्होंने यह भी बताया कि विभिन्न क्षेत्रों में मक्का की प्रति हेक्टेयर उत्पादकता में बड़ा

अंतर है, जिसे प्रभावी तकनीकी प्रसार के माध्यम से कम किया जा सकता है। भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना के निदेशक डॉ. एच.एस. जाट ने बताया कि सतत अनुसंधान प्रयासों से स्वीट कॉर्न, पॉप कॉर्न, बेबी कॉर्न, बायोपयूल और बायोफोर्टिफाइड किस्मों सहित कुल 39 उन्नत प्रभेद चिन्हित किये गये हैं, जिनमें से 30 खरीफ मौसम के लिए उपयुक्त हैं। उन्होंने कहा कि ये किस्में रोग, कीट और सूखा सहनशीलता के गुणों से युक्त हैं और इनके विकास में 25 अनुसंधान केंद्रों का योगदान रहा

है। कार्यशाला में आईसीएआर के वरिष्ठ अधिकारी, मक्का परियोजना प्रबंधन समिति के अध्यक्ष, नोडल अधिकारी, वैज्ञानिक, उद्योग जगत के प्रतिनिधि, बीज निगमों के अधिकारी तथा प्रगतिशील किसान शामिल हुए। इस अवसर पर उत्कृष्ट योगदान के लिए वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया तथा मक्का फसल पर आधारित एक पुस्तक का भी लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम में देश के 37 कृषि विश्वविद्यालयों और आईसीएआर संस्थानों के 250 से अधिक वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय में मक्का वैज्ञानिकों की तीनदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का समापन, डॉ एससी दुबे ने कहा

जलवायु सहिष्णु हाइब्रिड प्रभेदों के विकास पर शोध बढ़ाने की जरूरत

रांची। बिरसा कृषि विश्वविद्यालय में 9 से 11 अप्रैल तक आयोजित मक्का वैज्ञानिकों की तीनदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का शनिवार को सफल समापन हो गया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य देश में मक्का उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाने, बदलते जलवायु परिदृश्य में इसके क्षेत्र विस्तार की रणनीतियों पर विचार-विमर्श तथा उच्च उपज क्षमता वाली नई किस्मों की पहचान करना था।

कार्यशाला के दौरान अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (एआइसीएआरपी) के अंतर्गत वर्ष 2025 में राज्यवार एवं क्षेत्रवार उपलब्धियों की विस्तृत समीक्षा की गई। साथ ही आगामी वर्ष के लिए अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रम का रोडमैप भी तैयार किया गया।

समापन सत्र को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ एस.सी. दुबे ने कहा कि एआइसीएआरपी के तहत निजी क्षेत्र के साथ समन्वय स्थापित कर उच्च गुणवत्ता वाले हाइब्रिड प्रभेदों के विकास पर शोध को और तेज करने की आवश्यकता है। उन्होंने



15 प्रतिशत से अधिक प्रोटीन कंटेंट, बड़े दाने आकार, अधिक स्टार्च, जलवायु सहिष्णु एवं रोगरोधी किस्मों के विकास पर विशेष बल दिया। साथ ही कीट एवं रोग निवृत्तण के लिए क्वॉरेंटाइन सुविधाओं को सुदृढ़ करने की जरूरत बताई।

उन्होंने यह भी कहा कि देश में उत्पादित मक्का का लगभग 50 प्रतिशत हिस्सा पशु चारा के रूप में उपयोग होता है, जबकि पेट्रोल में 30 प्रतिशत तक एथनॉल मिश्रण

की अनुमति के कारण इसकी मांग लगातार बढ़ रही है। ऐसे में मक्का उत्पादन में वृद्धि कर कच्चे तेल के आयात पर होने वाले अर्खों डॉलर के खर्च को कम किया जा सकता है। उन्होंने प्रति हेक्टेयर उत्पादन में मौजूद अंतर (2 से 5 क्विंटल) को कम करने के लिए प्रभावी तकनीकी प्रसार कार्यक्रमों पर जोर दिया।

इस अवसर पर भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना के निदेशक डॉ एच.एस. जाट ने

बताया कि सतत शोध प्रयासों के परिणामस्वरूप देश में स्वीट कॉर्न, पॉप कॉर्न, बेबी कॉर्न, बायोफ्यूल और बायोफोर्टिफाइड किस्मों सहित कुल 39 उन्नत प्रभेदों की पहचान की गई है, जिनमें से 30 खरीफ मौसम के लिए उपयुक्त हैं। उन्होंने बताया कि इन उच्च उपजशील एवं रोग-कीट व नमी की कमी के प्रति सहिष्णु किस्मों के विकास में देश के 25 केंद्रों का योगदान रहा है। कार्यक्रम में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक

महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसलें) डॉ एस.के. प्रधान, परियोजना सलाहकार समिति के अध्यक्ष डॉ सैन दास, नोडल अधिकारी डॉ सुनील नीलम तथा आयोजन सचिव डॉ मणिगोपा चक्रवर्ती ने भी अपने विचार साझा किए।

मक्का अनुसंधान एवं विकास में उत्कृष्ट योगदान के लिए डॉ मणिगोपा चक्रवर्ती तथा केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ आदित्य कुमार सिंह को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर डॉ संतोष कुमार, डॉ भूपेंद्र कुमार और डॉ मणिगोपा चक्रवर्ती द्वारा संयुक्त रूप से लिखित मक्का फसल पर आधारित पुस्तक का लोकार्पण भी किया गया।

कार्यशाला में स्टार्च, फीड, एथेनॉल, बीज, कृषि रसायन एवं कृषि यंत्र उद्योगों से जुड़े प्रतिनिधियों, राष्ट्रीय एवं राज्य बीज निगमों के अधिकारियों तथा प्रगतिशील किसानों सहित देश के 37 कृषि विश्वविद्यालयों एवं आईसीएआर संस्थानों के 250 से अधिक वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

हाइब्रिड वेराइटी के विकास पर शोध करें : डॉ दुबे

रांची. बिरसा कृषि विवि के कुलपति डॉ एससी दुबे ने कहा है कि हाइब्रिड वेराइटी के विकास पर शोध प्रयास बढ़ाने की आवश्यकता है. उन्होंने 15 प्रतिशत से अधिक प्रोटीन कंटेंट, बड़ा दाना आकार तथा अधिक स्टार्च वाले, जलवायु, रोगरोधी वेराइटी के विकास तथा रोगों-कीड़ों से बचाव के लिए क्वारेंटाइन सुविधाओं के सुदृढीकरण पर जोर दिया. कुलपति शनिवार को बीएयू में आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के समापन पर बोल रहे थे. कार्यशाला में वर्ष 2025 के दौरान राज्यवार व क्षेत्रवार उपलब्धियों की समीक्षा की गयी. अगले वर्ष के लिए अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रम का रोडमैप तैयार किया गया. कुलपति ने कहा कि देश में उत्पादित मक्का का लगभग 50 पशुओं के दाना-चारा में प्रयोग होता है और पेट्रोल में 30 प्रतिशत तक एथनाल मिलाने की अनुमति है. इसलिए मक्का उत्पादन बढ़ाकर क्रूड आयात पर होनेवाले खर्च को अरबों डॉलर घटाया जा सकता है. इस अवसर पर भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना के निदेशक डॉ एचएस जाट, आइसीएआर के डॉ एसके प्रधान, डॉ सैन दास, डॉ सुनील नीलम और डॉ मणिगोपा चक्रवर्ती आदि उपस्थित थे.



Main Edition



10 April 2026
Published Friday

Maize workshop begins at BAU, ICAR chief sets global vision

DB Reporter



Ranchi: A three-day national workshop of maize scientists began at Birsa Agricultural University (BAU) on Thursday, bringing together experts from across the country to discuss research, productivity, and innovation in maize cultivation.

Dr Mangilal Jat, Secretary, Department of Agricultural Research and Education, Government of India, and Director General, ICAR, urged scientists to work collectively to make India a global hub for maize research, development, production, and innovation.

Addressing the 69th Annual Workshop of the All India Coordinated Research Project on Maize, Dr Jat stressed the need for

a strong data ecosystem, better coordination among research institutions, and promotion of public-private partnerships.

He said data should be systematically collected and used for accurate forecasting, rather than only for post-analysis. He also highlighted the need to develop crop varieties with higher nutrient-use efficiency, noting that natural

resources are limited.

Dr Jat further emphasised investing in human capital by training scientists and exposing them to leading laboratories in India and abroad.

ICAR Deputy Director General (Crop Science), Dr DK Yadav, said maize productivity in India has increased from 2,567 kg/ha in 2014-15 to 3,590 kg/ha in 2024-25. The target is to reach 4,100 kg/ha

by 2030-31.

However, he noted that this is still below the global average of 6,000 kg/ha. Countries like Brazil, with similar agro-climatic conditions, achieve around 5,500 kg/ha.

Over the past 11 years, India has developed 315 hybrid maize varieties, including sweet corn, popcorn, baby corn, biofuel-purpose, and biofortified types-113 by the

private sector and 202 by the public sector.

BAU Vice Chancellor Dr SC Dubey highlighted the potential to increase maize productivity and cultivation area in Jharkhand and Bihar.

He said Jharkhand's current productivity is 2.4 tons per hectare, compared to the national average of about 3.5 tons per hectare. He stressed the need to develop high-protein varieties (above 15%), strengthen quarantine systems, and improve collaboration with the private sector in seed production and extension.

ICAR Assistant Director General (Food and Fodder Crops), Dr SK Pradhan, said maize ranks first in global cereal production.

Global annual production stands at 1,299 million tons, compared to

740 million tons for wheat and 540 million tons for rice. He emphasised improving productivity in rainfed areas and developing climate-resilient varieties.

Dr HS Jat, Director of the Indian Institute of Maize Research, Ludhiana, noted that 40% of India's ethanol production comes from maize. He also presented the annual progress report during the welcome address.

More than 250 scientists from 37 agricultural universities and ICAR institutes are participating in the workshop.

On the occasion, two progressive farmers-Nand Kishore Sahu from Chandro block and Abhishek Mishra from Ranchi-were honoured for promoting innovative agriculture and improving farmers' productivity and income.

Shared via Dynamic Bharat Digital E-Paper Platform

'Make India global hub of research on maize'

Raj Kumar

htjarkhand@hindustantimes.com

RANCHI: In a major push to transform India into a global powerhouse for maize research and production, Mangilal Jat, secretary (DARE) and DG, Indian Council of Agricultural Research (ICAR), on Thursday called for a collective national effort to bridge the productivity gap and foster innovation through public-private partnerships.

Speaking at the 69th Annual Workshop of the All India Coordinated Research Project on Maize at Birsa Agricultural University (BAU), Jat laid out a road map to transition from traditional farming to a data-driven ecosystem.

"Make India a global hub for maize research and develop-



69th Annual Maize Workshop at BAU on Thursday

HT PHOTO

ment," Jat urged the scientific community.

He emphasised that the future of food security lied in precision, stating, "Data should be systematically collected and used for accurate forecasting rather than merely for post-

analysis of efforts and outcomes." While India's maize productivity has seen a significant jump—rising from 2,567 kg per hectare in 2014-15 to 3,590 kg in 2024-25—the top expert noted that the country still lagged behind global standards.



Data should be systematically collected and used for accurate forecasting

MANGILAL JAT, DG, ICAR

ICAR deputy DG (crop science), DK Yadav, revealed an ambitious target: "The goal is to reach 4,100 kg per hectare by 2030-31." However, he pointed out that India still trailed the global average of 6,000 kg per hectare. "Brazil, with similar agro-climatic conditions, achieves about 5,500 kg per hectare," Yadav noted, highlighting the untapped potential in Indian

soil.

The workshop highlighted maize's evolving role beyond the dinner table. HS Jat, director, Indian Institute of Maize Research, Ludhiana noted a critical shift in the energy sector: "Currently, 40% of the ethanol used in India is derived from maize."

With global maize production at 1,299 million tons—surpassing both wheat (740m) and rice (540m)—BAU V-C SC Dubey identified Jharkhand and Bihar as the next frontiers for growth.

He advocated for "strengthening quarantine facilities to protect crops from pests' and developing high-protein varieties exceeding 15% content.

Local farmers Nand Kishore Sahu and Abhishek Mishra were honoured for pioneering innovative farming techniques.